भजन

तर्ज–सुहाना सफर और ये मौसम हंसी

रिझाती पिया को जैसे सखियां सभी,
ये पुतलीयां जवेरन रिझायें सखी

1– शाक सब्जी वनों से लाते बंदर,
खूबखुशाली भी सेवा में हाजिर
करें सेवा,हुकम मानें,है रूहों की ये साहेबी
2– मन के स्वरूप सखियों के हैं ये,
एक पल में पच्चीस पक्ष घूमें हैं ये
कई वस्तां,ले के खड़ियां,असल आनंद है यहीं
3– धाम में सब कोई प्रेम करता,
पिया का दिल ही तो लीला है करता
पसु पंखी,खूब खुसाली,के या हों पुतलियां सभी
4– जर्रा जर्रा माफिक है रूहों के,
अर्शे वाहेदत में रहते सभी ये
बनके आशिक,वे रिझायें,प्रीतम को सभी
5– जिसे न समझा था धाम में रहकर,
बताया खेल में इलम से मेहर कर
बड़ा है इश्क,बड़ी साहेबी,के तुम ही तुम हो धनी